UNIT 5

Write short notes on value of self-sacrifice vs value of self centredness.

संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए |

आत्म त्याग बनाम आत्म केन्द्रीयता का मूल्य |

SYNOPSIS

- **Introduction**
- **Meaning**
- **Definition**
- **Positive aspects of self centredness or egocentrism (आत्म एवं आत्म केन्द्रीयता का सकारात्मक पक्ष)**
- **Negative aspects of self centredness or egocentrism (आत्म एवं आत्म केन्द्रीयता का नकारात्मक पक्ष)**
- **Value of self sacrifice vs value of self centredness (आत्मत्याग बनाम आत्मकेन्द्रीयता का मूल्य)**
- **Role of education in development of value of self sacrifice (आत्मत्याग के मूल्य के विकास में शिक्षा की भूमिका)**
- **Conclusion**

INTRODUCTION

We should not necessarily value self sacrifice. It depends on various factors. Self-sacrifice is valuable only when it is an act of love, which means that it benefits the GGGNLT: the Greater Good for the Greater Number for the Long Term. When you truly Love, the Love that you are as a spiritual being grows.

Self-centered people tend to ignore the needs of others and only do what's best for them. You can also call them egocentric, egoistic, and egoistical.

आत्म त्याग एवं आत्म केन्द्रीयता दो विरोधी मूल्य है, जो प्रत्येक व्यक्ति में पाए जाते हैं | दोनों मूल्य की अपनी विशिष्टताएँ हैं, आत्म त्याग वस्तुतः एक कठिन कार्य है | आत्म त्याग के लिए दृढ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है |

आत्म केन्द्रीयता जैसा कि शब्द से स्पष्ट है, आत्म केन्द्रीयता अर्थात किसी व्यक्ति का स्वयं पर केन्द्रीय होना | जब व्यक्ति अपने अलावा किसी व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, मूल्यों, तर्कों स्थिति इत्यादि को महत्त्व प्रदान नहीं करते हैं, तथा अपने विचारों, भावनाओं, मूल्यों तर्कों, स्थिति इत्यादि को महत्त्व प्रदान किया जाता है तो यह स्थिति आत्म केन्द्रीयता, स्वकेंद्रियता अथवा अहंकेन्द्रीयता की स्थिति कहलाती है |

MEANING OF SELF-SACRIFICE VS SELF-CENTREDNESS

ऐसे मूल्य के लोग न तो अन्य व्यक्तियों को अपने ऊपर आश्रित होने देते हैं, और ना अन्य व्यक्तियों पर आश्रित होते हैं, ऐसे मूल्य वाले व्यक्ति सदेव स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर होते हैं |

आत्म अथवा स्वकेंद्रियता का मूल्य पियाजे ने संज्ञात्मक विकास की अवधारणा के अंतर्गत इसे स्पष्ट करते हुए कहा है कि आत्मकेंद्रियता ऐसी अवस्था है जिसमे बालक सिर्फ अपने ही विचार को सही मानता है | उसे कुछ इस तरह का विश्वास हो जाता है कि दुनिया की अधिकतर चीजें उसके इर्द गिर्द चक्कर लगाती रहती है | जैसे वह तेजी से दौड़ता है, तो सूर्य भी तेजी से चलना आरम्भ कर देता है, उसकी गुडिया वही देखती है जो वह देख रहा है आदि | पियाजे ने वह भी बताया है कि जैसे जैसे बालकों का संपर्क अन्य बालकों एवं भाई बहनों से बढ़ता है उसके चिंतन में आत्मकेन्द्रीयता का शिकायत कम हो जाती है |

आत्म त्याग की परिभाषाएं

महात्मा गाँधी के अनुसार "आत्म त्याग अथवा बलिदान वही कर सकता है, जो शुद्ध है, निर्भय है, योग्य है |"

जोर्ज -बर्नार्ड--शॉ--के--अनुसार " आत्म त्याग से आप दूसरों को बिना संकोच के त्याग करने के लिए प्रेरित करते हैं |"

(आत्म त्याग का मूल्य के व्यक्ति आगे चलकर समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल होते हैं, ऐसे लोग शिक्षा, राजनीति, आर्थिक, सामाजिक इत्यादि क्षेत्र में कार्य करते हैं तथा सफल होते हैं |)

आत्म अथवा स्वकेन्द्रीयता का मूल्य की परिभाषाएं

अरुण कुमार सिंह के अनुसार "अहंकेन्द्रीयता मूल्य वाले व्यक्तियों में आत्म महत्त्व (SELF IMPORTANCE) की भावना काफी तीव्र एवं मजबूत होती है | ऐसे व्यक्ति अपने आप को काफी महत्वपूर्ण समझते हैं और लोगों से अलग विशेष सेवा की उम्मीद करते हैं |"

रमन महर्षि के अनुसार " सारी दुनिया को तिनके के समान जानना आसन है, तमाम शास्त्रों का ज्ञान पाना आसन है, परन्तु आत्मशलघा को निकाल बाहर करना बहुत दुश्वार है |"

POSITIVE ASPECTS OF SELF-CENTREDNESS OR EGOCENTRISM

(आत्म एवं आत्म केन्द्रीयता का सकारात्मक पक्ष)

S.No.	VALUE OF SELF-SACRIFICE VS VALUE OF SELF-CENTERDNESS
1	सकारात्मकता (POSITIVITY)
2	आत्म निर्भरता (SELF DEPENDENCY)
3	वैज्ञानिक चिंतन एवं विकास (CREATIVE THINKING AND DEVELOPMENT)

4	आत्म त्याग की प्रवृत्ति (TENDENCY OF SELF SACRIFICE)
5	नवीन परिस्थितियों में सामंजस्य (ADJUSTMENT IN NEW SITUATIONS)
6	व्यक्ति विशेष के लिए हितकर (BENEFICIAL FOR INDIVIDUAL SPECIFIC)
7	समाज में स्थान बनाना (MAKING PLACE IN SOCIETY)

NEGATIVE ASPECTS OF SELF-CENTREDNESS OR EGOCENTRISM

(आत्म एवं आत्म केन्द्रीयता का नकारात्मक पक्ष)

S.No.	VALUE OF SELF-SACRIFICE VS VALUE OF SELF-CENTERDNESS
1	असंतोषी प्रवृत्ति (FEELING OF DIS SATIFACTION)
2	श्रेष्ठता की भावना (FEELING OF SUPERIORITY)
3	जोखिम उठाने की प्रवृत्ति (TENDENCY OF TAKING RISK)
4	मनोवैज्ञानिक समस्या (PSYCHOLOGICAL PROBLEM)
5	असामाजिक व्यवहार (ANTI SOCIAL BEHAVIOUR)
6	समाज के लिए हानिकारक (HARMFUL FOR SOCIETY)

आत्मत्याग बनाम आत्मकेन्द्रीयता का मूल्य (VALUE OF SELF-SACRIFICE VS VALUE OF SELF CENTREDNESS)

आत्मत्याग बनाम आत्मकेन्द्रीयता के मूल्य का अध्ययन करते हैं तो हम पाते है कि दोनों के मध्य प्रयास भिन्नता है | किसी व्यक्ति में आत्मत्याग तथा आत्म केन्द्रीयता दोनों मूल्यों का होना कठिन है | आत्मत्याग का मूल्य आत्मकेन्द्रीयता का विरोधी मूल्य है | दोनों मूल्यो के अन्तसंबंध को निम्न बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया गया है

1. परस्पर विरोधी मूल्य (OPPOSITE VALUE) आत्मत्याग तथा आत्म केन्द्रीयता के मूल्य दोनों आपस में परस्पर विरोधी मूल्य हैं | आत्मत्याग जहाँ परोपकार के लिए अपने हितों का त्याग से सम्बंधित है वहीं आत्मकेन्द्रीयता अपने हितों को अन्य लोग इन के हितों की अपेक्षा आधिक महत्त्व प्रदान करने से है |

2. सामाजिक स्वीकृति (SOCIAL ACCEPTANCE) आत्मत्याग के मूल्य का समाज के द्वारा स्वीकृति प्रदान की जाती है तथा उच्च स्थान प्रदान किया जाता है जबकि आत्म केन्द्रीयता के मूल्य को समाज के द्वारा निम्न स्थान प्रदान किया जाता है | तथा आत्मकेन्द्रीत व्यक्तियों की समाज में उपेक्षा की जाती है |

3. प्रकृती में अंतर (DIFFERENCE IN NATURE) आत्मत्याग को सकारात्मक प्रकृति का मूल माना जाता है जबकि आत्मकेन्द्रीयता के मूल्य को नकारात्मक मूल्य के अंतर्गत शामिल किया जाता है | प्रत्येक व्यक्ति से आत्मत्याग के मूल्य की अपेक्षा की जाती है जबकि आत्मकेन्द्रीयता की प्रायः उपेक्षा की जाती है |

4. अनुभुती का अंतर (DIFFERENCE IN FEELING) आत्मत्याग एवं आत्मकेन्द्रीयता के मूल्य में अनुभूति का अंतर देखने मिलता है आत्मत्यागी व्यक्ति त्याग के पश्चात कुछ समय मात्र में कष्ट का अनुभव करते हैं, अपनी आवश्यकताओं में से कटौती करके त्याग करते हैं जबकि आत्मकेन्द्रीयता मूल्य वाले व्यक्ति किसी प्रकार का त्याग नहीं करते हैं, अतः उन्हें किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव नहीं होता है |

5. लाभ में अंतर (DIFFERENCE IN PROFFIT) आत्मत्याग से व्यक्ति तथा समाज दोनों का लाभ होता ई, आत्मत्याग व्यक्ति को अध्यात्मिक सुख प्रदान करता है जबकि आत्मकेन्द्रीयता का मूल्य व्यक्ति को केवल लाभ प्रदान करता है | आत्मत्याग से ही वास्तविक सुख की कामना की जाती है जबकि आत्मकेन्द्रीयता सुख प्राप्त करना कठिन है |

6. आत्मत्याग शाश्वत मूल्य (SELF SACRIFICE AS ETERNAL VALUE) आत्मत्याग को शाश्वत मूल्य माना गया है, भारतीय शास्त्रों में आत्मत्याग को सर्वाधिक मूल्यवान मूल्य माना गया है तथा सभी से अपेक्षा की गई है कि आत्मत्याग आवश्यक है जबकि आत्मकेन्द्रीयता को शाश्वत मूल्य नहीं माना गया है |

7. संतुलित विकास के आधार पर (BASIS ON BALANCED DEVELOPMENT) आत्मत्याग व्यक्ति तथा समाज के संतुलित विकास में सहायक होते हैं तथा आत्मत्याग के माध्यम से व्यक्ति अपना विकास सकारात्मक रूप से करते हैं जबकि आत्मकेन्द्रीयता की प्रबल भावना व्यक्ति के विकास का अवरुद्ध करता है तथा मानसिक विकास को जन्म देते हैं |

ROLE OF EDUCATION IN DEVELOPMENT OF VALUE OF SELF SACRIFICE (आत्मत्याग के मूल्य के विकास में शिक्षा की भूमिका)

S.No.	Role of education in development of value of self sacrifice
1	Ideal personality of teacher (शिक्षक का आदर्श व्यक्तित्व)
2	Positive enviornment of classroom (कक्षा का सकारात्मक वातावरण)
3	Presentation of stories and motivational thougts (प्रेरक प्रसंगों अथवा कहानियों का प्रस्तुतीकरण)
4	Participating in Dramas (नाटकों का मंचन)
5	Visiting old age homes and orphanage (वृद्धाश्रम एवं अनाथाश्रमों का अवलोकन)
6	Encouragment to donation (दान को प्रोत्साहन)
7	Help in various disaster (विभिन्न आपदाओं में सहयोग)
8	Change in curriculum (पाठ्यचर्या में परिवर्तन)
9	Change in Teaching method (शिक्षण विधि में परिवर्तन)

CONCLUSION (निष्कर्ष)

आत्म-त्याग अपने आप में अंतिम महत्वपूर्ण मूल्य है | इस मूल्य का प्रत्येक व्यक्ति में होना अवशयक है, लेकिन व्यक्ति इन मूल्यों को प्राप्त करने तथा अपनाने का प्रयास नहीं करते हैं | इसी बिंदु को स्पष्ट करते हुए महात्मा गाँधी कहते हैं कि "मनुष्य की प्रकृति ऐसी है कि वह अतिशय सामान्य वास्तु को कुछ नहीं समझते | जैसे जब हम बोलते हैं, बिना खाए पिए मनुष्य की एक घडी भी गति नहीं है, तब हम हवा के सम्बन्ध में कुछ नहीं सोचते | इसी प्रकार आत्म त्याग है, जिंदगी आत्मत्याग करने से निभती है, फिर भी हम इस ओर ध्यान नहीं देते |" गाँधी जी भी आगे कहते हैं कि "त्याग के बाद ही सही अर्थों में जीवन की शुरुवात होती है |"

आत्मकेन्द्रीयता अथवा अहंकेन्द्रीयता का आर्थ अपने स्वयं के कल्याण एवं हितों से सम्बन्ध रखने को कहा जाता है | यह एक प्रकार का मूल्य जिसमे व्यक्ति अपने आपको अन्य व्यक्तियों को तुलना में अनेक प्रकार से अधिक महत्त्व प्रदान करते हैं| **Self centredness** के प्रयाय्वाची शब्द के रूप में **self concern, egoism, ego centrism, self inerest** होता है |

अरुण कुमार सिंह के अनुसार "अहंकेन्द्रीयता मूल्य वाले व्यक्तियों में आत्म महत्त्व (SELF IMPORTANCE) की भावना काफी तीव्र एवं मजबूत होती है | ऐसे व्यक्ति अपने आप को काफी महत्वपूर्ण समझते हैं और लोगों से अलग विशेष सेवा की उम्मीद करते हैं |"